SHODH SAMAGAM
ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारतीय लोक संस्कृति का शिक्षा पर प्रभावः एक अध्ययन

पूजा दुबे, पीएच–डी., शिक्षा विभाग
संत हरकेवल शिक्षा महाविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
पूजा दुबे, पीएच–डी.
E-mail : 9@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/03/2025
Revised on : 15/05/2025
Accepted on : 24/05/2025
Overall Similarity : 00% on 16/05/2025

शोध सार

भारतीय लोक संस्कृति पर शिक्षा पर प्रभाव हर काल में दिखाई देता है। प्राचीन काल से आज तक आधुनिक युग तक शिक्षा के द्वारा ही संस्कृति को अपने आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाता है। भारतीय लोक संस्कृति का यह प्रभाव हमें आज शिक्षा जगत में शिक्षा प्रणाली, शिक्षण विधियॉ और पाठ्यक्रम में दिखाई देती है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में गुरू शिष्य परम्परा के माध्यम से शिक्षार्थियों को ज्ञान, नैतिकता और जीवन के मूल्यों को विकसित किया जाता था जिससे उन्हे भारतीय संस्कृति की जड़ों से जोंड़ कर रखा जाये। आधुनिक शिक्षा पद्धति से भारतीय लोक सांस्कृति से प्राप्त ज्ञान और दर्शन शिक्षा के माध्यम से आधुनिक पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाता है। प्राचीन संस्कृति की जानकारी हेतु भारतीय दर्शन, इतिहास जैसे विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है जिससे छात्र भारतीय लोक संस्कृति के मूल्यों, आदर्शो और परम्परा को समझ सके और अपनी संस्कृति के बारे मे जानकर गर्व करें। भारतीय लोक संस्कृति का ज्ञान शिक्षा के माध्यम से प्रसारित किया जाता है जिससे हम अपने भारतीय लोक संस्कृति को सरलता से मूल्य, नैतिकता, समावेषन, सहिष्णुता आदि गुण शिक्षार्थी को हस्तांतरित करते है। भारतीय लोक संस्कृति हमारी शिक्षा प्रणाली को आधार प्रदान करती है जिससे शिक्षार्थी को सर्वांगीण विकास हो सके। भारतीय लोक संस्कृति शिक्षार्थी के मूल्यों और गुणों को विकसित करने का माध्यम है। शिक्षा के द्वारा हमारे समाज में भारतीय संस्कृति को परम्पराएँ, रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज आदि का विस्तार होता है। यह शिक्षा जगत के लिये एक आवश्यक एवं आधारशिला के रूप में है जिससे हमारे समाज का निर्माण होता है। भारतीय लोक संस्कृति के द्वारा शिक्षण विधि पाठ्यक्रम अनुषासन, विद्यालय समस्त विषयवस्तु का ज्ञान सरलता होता है। भारतीय लोक संस्कृति में विविधता है जो हमें

स्पष्ट दिखायी देती है, जैसे हर 15 किलोमीटर पर लोगों की बोली बदल जाती है। भारतीय लोक संस्कृति के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था का एक प्रशस्त मार्ग अवतरित होता है जिससे बहुत सरलता से हम अपनी लोक संस्कृति, साहित्य, सभ्यता को आगे बढ़ा सकते है। लोक संस्कृति के माध्यम से लोक गीत, लोक कथाएँ, लोकोत्तियॉ, मुहावरें, लोक त्यौहार, रीति–रिवाज, आदि का हस्तान्तरण के द्वारा ही संभव है।

मुख्य शब्द

भारत, लोक संस्कृति, शिक्षा, साहित्य.

अध्ययन का अवधारणा

लोक संस्कृति मानव समाज की आधारशिला है। लोक संस्कृति के माध्यम से स्थान का बोध, दिखावा, प्रदेश या क्षेत्र, जन लोग, समाज प्राणी आदि को ज्ञान प्राप्त होता है। लोक संस्कृति दो शब्दो से मिलकर बना है। लोक शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के ''लोक दर्शने'' धातु से धञ प्रत्यय के योग से हुई है जिसका अर्थ होता है देखने वाला लेकिन व्यवहार में लोक का अर्थ जन से लिया जाता है। संस्कृति के ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मानव समाज अपने सदस्यों के व्यवहार और सोच को आकार देता है। यह प्राणी के मूल्य, विश्वास, ज्ञान, कला, नैतिकता, कानून, रीति–रिवाज मानव द्वारा अर्जित क्षमताएँ और आदतो के समग्र रूप को कहते है। संस्कृति मानव समाज के लिये बहुत आवश्यक है, क्योकि यह प्राणीयों को एक साथ जोड़कर रखने ओर दिशा देने में मदद करती है। लोक संस्कृति का शिक्षा पर प्रभाव देखने को मिलता है। आज हमारे शिक्षा जगत में पाठ्यक्रम निर्माण के समय यह ध्यान रखा जाता है कि पाठ्यक्रम में ऐसे विषयों का समावेशी किया जाये जिससे शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ विद्यार्थी के नैतिकता और जीवन के मूल्यों का विकास हो सकें। लोक संस्कृति न केवल हमें एक आदर्श जीवन जीने का ढंग दिखाती है, बल्कि शिक्षा के माध्यम से हम भारतीय संस्कृति के जड़ों से जुड़े रहते है। भारतीय संस्कृति मूल्य जैसे – मानवीय मूल्य, पारिवारिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, आदि हैं। शिक्षा के माध्यम से हम अपने बच्चों में इस सभी मूल्यों का विकास करते है। इन लोक सांस्कृतिक मूल्यों में किसी समाज के रीति–रिवाज, दृष्टिकोण और प्रथाएँ शामिल होती है। हमारी शिक्षण विधियॉ, विद्यालय, शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम अनुशासन, आदि सभी लोक संस्कृति से ज्ञान प्राप्त कर सरलता से विचारों का आदान–प्रदान या सम्प्रेषण कर रहे है।

लोक संस्कृति का शिक्षा पर प्रभाव देखने को मिलता है। लोकगीत, लोक कथाएँ, लोक कलाएँ, अन्य प्रथाएँ, लोक त्यौहार, रीति–रिवाज एवं परम्पराएँ शिक्षा को अधिक प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाती है। लोक गीत आदि का प्रयोग करने से कक्षा–कक्ष का वातावरण मनोहारी हो जाता है, और सक्रियता से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया संचालित होती है। गॉधी जी ने लोक गीतों को ''संस्कृति का धरोहर कहा है'' जो परम्परागत रूप से लोककंठ में संचित हो वही लोक संस्कृति हैं। कोई विशिष्ट समय पर, विशिष्ट स्थल पर निवास करने वाले विशिष्ट लोगो का रहन–सहन, आचार–विचार, परम्परा, रीति–रिवाज की समस्त शैली संस्कृति के अंतर्गत आती है। भारतीय लोक संस्कृति शिक्षा को मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. भारतीय लोक संस्कृति का शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शोध के माध्यम से आज के समय में भारतीय लोक संस्कृति की प्रासांगिता को जानना।
3. शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में भारतीय लोक संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पनाएँ

H_1: भारतीय लोक संस्कृति का शिक्षा पर सार्थक प्रभाव दिखाई देगा।

H_2: शोध के माध्यम से आज के समय में भारतीय शिक्षा संस्कृति की प्रासंगिता की सहजता से प्रसारित किया जा सकेगा।

H_3: शिक्षा के गुणवत्ता को बढ़ाने में भारतीय लोक साहित्य का अभूतपूर्व योगदान दिखाई देगा।

शोध विधि

शैक्षिक अनुसंधान में बहुत सी वैज्ञानिक विधियॉं है, कोई भी विधि अन्य विधि से श्रेष्ठ नहीं कही जा सकती है। इस अध्ययन के तहत विभिन्न पत्रिकाओं, शोध पत्रों एवं इंटरनेट से प्राप्त समीक्षा की गई जो भारतीय लोक संस्कृति पर शिक्षा के प्रभाव का एक अध्ययन पर प्रकाशित हुई है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णनात्मक विधि एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग करते हुए सर्वेक्षण द्वारा आँकडें संकलित किये जायेंगें।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन सरगुजा के अम्बिकापुर शहर के प्राईवेट स्कूल के विद्यार्थियों को चयनित किया गया। कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। विद्यार्थियों की आयु 12 वर्ष से 18 वर्ष में मध्य निर्धारित है।

न्यादर्श 100

बालक 50 बालिका 50

सारे विद्यार्थी को अम्बिकापुर शहर के प्राईवेट विद्यालय से चयनित किया गया। समस्त विद्यार्थियों को रैंडम चयन किया गया।

शोध उपकरण

आवश्यक शोध अध्ययन हेतु शोध उपकरण की आवश्यकता होगी। स्वतः निर्मित उपकरण के रूप में प्रश्नावली का निर्माण किया गया है।

आँकड़ो का विश्लेषण

इस हेतु प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़े एकत्रित करके उनका निष्कर्ष प्राप्त किया गया।

भारतीय लोक साहित्य का शिक्षा पर प्रभावः एक अध्ययन से संबंधित प्रश्नावली।

क्र.	प्रश्न	विकल्प	
		हॉं	नहीं
1.	क्या आप अपनी लोक संस्कृति से अवगत है?	90%	10%
2.	क्या लोक कथाओं या जातक कथाओं के माध्यम से आपके नैतिक मूल्यों का विकास होता है?	85%	15%
3.	क्या आपकों शिक्षा प्राप्त करते समय लोक संस्कृति की झलक दिखाई देती है?	92%	08%
4.	क्या आपके विद्यालय में लोक संस्कृति से संबंधित कार्यक्रम कराये जाते है?	80%	10%
5.	क्या कक्षा–कक्ष में लोक संस्कृति से संबंधित प्रासंगिक उदाहरणों का प्रयोग किया जाता है?	75%	25%
6.	क्या लोक कथाऍ एवं लोकगीत आपको रचनात्मकता को बढ़ाने में मदद करते है?	78%	22%

व्याख्या

इस तालिका में लोक संस्कृति का शिक्षा पर प्रभाव के अध्ययन से संबंधित 06 प्रश्न पूछे गयें। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर हॉं/नहीं में दिया गया जिससे विद्यार्थियों की भारतीय लोक संस्कृति के बारे में प्राप्त ज्ञान का आंकलन हो सकेगा।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रश्न 01: क्या आप अपनी लोक संस्कृति से अवगत है?

व्याख्या: 90 प्रतिशत बच्चे अपने लोक संस्कृति से अवगत है 10 प्रतिशत बच्चों को अपनी लोक संस्कृति का ज्ञान नहीं है।

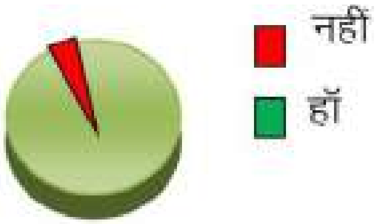

प्रश्न 02: क्या लोक कथाओं या जातक कथाओं के माध्यम से आपके नैतिक मूल्यों का विकास होता है?

व्याख्या: लोक कथाओं या जातक कथाओं के माध्यम से बच्चों के नैतिक मूल्यों का विकास 85 प्रतिशत होता है जबकि 15 प्रतिशत बच्चों में नहीं होता माना गया।

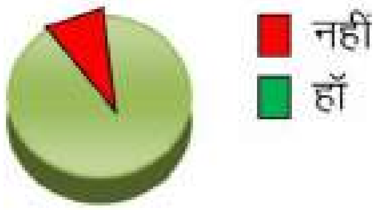

प्रश्न 03: क्या आपको शिक्षा प्राप्त करते समय लोक संस्कृति की झलक दिखाई देती है?

व्याख्या: 92 प्रतिशत बच्चों में शिक्षा प्राप्त करते समय लोक संस्कृति का झलक दिखाई देता है, 08 प्रतिशत बच्चों में इसकी झलक दिखाई नहीं देती।

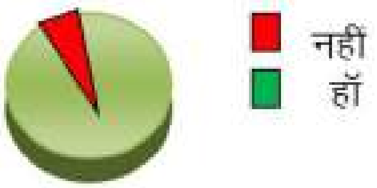

प्रश्न 04: क्या आपके विद्यालय में लोक संस्कृति से संबंधित कार्यक्रम कराये जाते है?

व्याख्या: 80 प्रतिशत बच्चों के विद्यालय में लोक संस्कृति से संबंधित कार्यक्रम कराये जाते है, जबकि 20 प्रतिशत विद्यालय में नहीं कराये जाते।

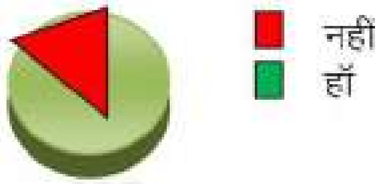

प्रश्न 05: क्या कक्षा–कक्ष में लोक संस्कृति से संबंधित प्रासंगिक उदाहरणों का प्रयोग किया जाता है?

व्याख्या: 75 प्रतिशत बच्चों के कक्षा–कक्ष में लोक संस्कृति से संबंधित प्रासंगिक उदाहरणों का प्रयोग किया जाता है 25 प्रतिशत बच्चो को ज्ञात नहीं है।

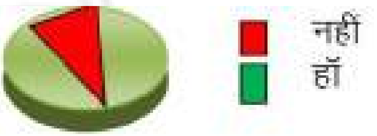

प्रश्न 06: क्या लोक कथाएँ एवं लोकगीत आपको रचनात्मकता को बढ़ाने में मदद करते है?

व्याख्या: 78 प्रतिशत बच्चों का मानना है कि लोक कथाएँ एवं लोकगीत रचनात्मकता को बढ़ाने में मदद करते है जबकि 22 प्रतिशत बच्चों को इसका ज्ञात नहीं है।

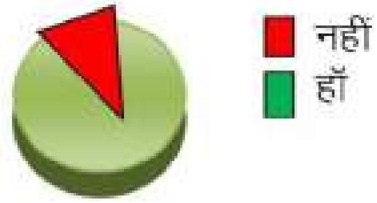

निष्कर्ष

भारतीय लोक संस्कृति हमारे अतीत की धरोहर है, जिसे शिक्षा के माध्यम से सरलता एवं सहजता से समाज में हस्तांतरित किया जाता है। भारत में हर 15 किलोमीटर पर बोली बदल जाती है, इस प्रकार हमारी संस्कृति में विविधता की झलक देखने को मिलती है। भारतीय लोक संस्कृति का शिक्षा पर प्रभाव जानने हेतु प्रश्नावली के माध्यम से हमने शोध कार्य सम्पन्न किया, जिससे यह जानकारी प्राप्त हुई कि भारतीय लोक संस्कृति के शिक्षा के द्वारा हम भारत की आत्मा को जिन्दा बनाकर रखते है। शिक्षा द्वारा ज्ञान का विस्तार होता है इस प्रक्रिया में हम भी विद्यार्थियों

को अपनी लोक संस्कृति से अवगत करते है तथा लोक संस्कृति का हस्तांतरण करते है, इसका जीता—जागता उदाहरण छ.ग. माध्यमिक स्तर की हिन्दी के किताब में देखने को मिलता है जिसमें कुछ पाठ छत्तीसगढ़ भाषा में लिखे हुए है।

संदर्भ सूची

1. श्रीवास्तव, संजय प्रसाद, (2019) लोक साहित्य की विधाएँ: एक अध्ययन, ISSN Point : 2394-7500, ISSN Online : 2394-5869, Impact Factor : 5.2, *IJAR*: 5 (8), 132-136, www.allreach journal.com, Received : 07-06-2019, Accessed on 10/02/2025.
2. वासुदेवनशेष, पी.आर (2019) *जी—4,* अक्षया फ्लेटस, 53 इरूस्पा स्वीट, आईस हाउस, ट्रिपलिकेन, चेन्नै, 60005 जुलाई—सितम्बर 2019, पृ. 41—46।
3. यूजीसी रिपोर्ट — भारतीय शिक्षा प्रणाली में लोक परंपराएँ, सत्र—2020—2021, सत्र—2021—2022, सत्र—2022—2023, सत्र—2023—2024, सत्र—2024—2025, सत्र—2025—2026, सत्र—2018—2019।

****